AYU

Access this article online
Website: www.ayujournal.org
DOI: 10.4103/0974-8520.105232
Quick Response Code:

Review Article

Sushruta-samhitA - A critical Review
Part-1 : Historical glimpse

Hari S. Sharma, Hiroe I. Sharma[1], Hemadri A. Sharma[2]

Ex. Director, National Institute of Ayurveda, Jaipur, Rajasthan and Ex. Dean cum Hospital Superintendent, Institute for Post Graduate Teaching and Research in Ayurveda, Gujarat Ayurved University, Jamnagar, Gujarat, India, [1]President, Osaka Ayurveda Kenkyusho, AIHORE pratisthanam, Japan, [2]Post Graduate Scholar, Department of Dravyaguna, Shri S.J.G. Ayurveda Institute and P.G. Center, Koppal, Karnataka, India

Abstract

In the history of Ayurveda, Sushruta stands before Caraka. He practically applied Vaidika culture for treatment. His treatise translated into nine foreign languages apart from various Indian languages like Hindi, Bengali, Malayalam, etc., *Sushruta* is the most celebrated physician and surgeon in India. Though he practiced during the 5th century BC, many of his contributions to medicine and surgery preceded similar discoveries in the western world. Sushruta devotes a complete volume of his experiences to ophthalmologic diseases. In the *Uttara Tantram*, Sushruta enumerates a sophisticated classification of eye diseases complete with signs, symptoms, prognosis, and medical/surgical interventions. In particular, Sushruta describes what may have been the first extracapsular cataract surgery using a sharply pointed instrument with a handle fashioned into a trough. His ability to manage many common eye conditions of the time with limited diagnostic aids is a testament to his virtuosity.

Key Words: Ayurveda, Caraka, *Sushruta, Sushruta Samhita*

अहं हि धन्वन्तरिरादिदेवो जरारुजामृत्युहरोऽ मराणाम् ।

शल्या"मंगैरपरैरुपेतं प्राप्तोऽ स्मि गां भूय इहोपदेष्टुम् ।। सु. सू.१-२१ ।। वेदोत्पत्ति .....अध्यायः

Address for correspondence: Prof. Hari Shankar Sharma,
AIHORE pratistanam, Ayurveda Kenkyusho
Nishinakajima, 4 Chome, 7-12,
501 Shi, Yodogawa-Ku, City – Osaka,
(Zip Code – 532 0011), Japan.
E-mail: aihore@yahoo.com

धान्वन्तर्ये जनसुखकृते सम्प्रदायेऽ भिषिक्तः काशीराज्ञः करणसरलः सद्विवोदासशिष्यः ।।

विश्वामित्रप्रियसुतवरः सुश्रुतख्यातकीर्तिः कर्णावत्यां तपनसुकरे कीर्तनीयोऽ स्ति नूनम् ।।

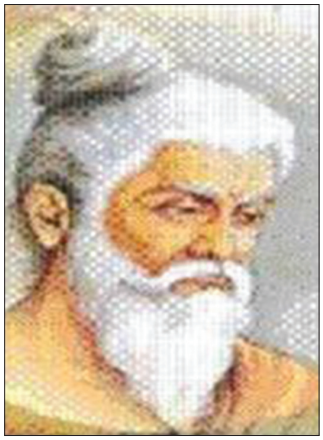

सुश्रुत – संकीर्त्तन

vAtAshitAci minnA kokoe sushrutasensei inorimasho.

काशीराज दिवोदासशिष्य सुश्रुत का संकीर्त्तन कर लें । सर्वप्रथम शल्य के शिक्षक सुश्रुत का संकीर्त्तन कर लें । ऊर्ध्वारोहित द्वापर

युग में सुश्रुत का संकीर्त्तन करलें । शल्य चिकित्सा मानव हित में सुश्रुत का संकीर्त्तन करलें । धन्वन्तरि संप्रदाय दीक्षित सुश्रुत का संकीर्त्तन कर लें । महाऋणों से मुक्ति पाने, सुश्रुत का संकीर्त्तन कर लें । विश्वामित्र पुत्र क्षत्रियकुल सुश्रुत का संकीर्त्तन कर लें । वैदिक संस्कृति रक्षक सर्जन सुश्रुत का संकीर्त्तन कर लें । प्लास्टिक सर्जरी जनक महर्षि, सुश्रुत का संकीर्त्तन कर लें । हरिः ओम् भद्रं कर्णेभिः शृणुयामव्विश्शवाः सुश्रुताय स्वाहा ।

शाश्वत विज्ञान आयुर्वेद के उपासकों में आचार्य सुश्रुत एक महान् विभूति हुए ।

आज तक सम्पूर्ण संसार में इनका नाम शल्य शास्त्र के जनक के रूप में अभिवन्दित है ।।

Father of Surgery

Statue of Sushruta in Haridwar

स्थान स्थान पर इनकी प्रतिमाओं की वन्दना होती है । आज हम इन्हीं आचार्य सुश्रुत के नाम मात्र का नहीं अपितु मानव मात्र के स्वास्थ्य की रक्षा के लिये किये गये इनके कार्य कलाप का संकीर्त्तन रहे हैं । सुश्रुत संहिता ईसा से ९०० वर्ष पहले[१] भगवान् धन्वन्तरि के प्रपौत्र[२,३] काशीराज दिवोदास के पास जा कर विश्वामित्र ऋषि के पुत्र[४] आचार्य सुश्रुत ने गंगा नदी के तट पर आयुर्वेद का पाठ पढा और शास्त्र के जन्मदाता बन गये । स्वयम्भुवा प्रोक्तमिदं सनातनं पठेद्धि यः काशिपतिप्रकाशितम् ।[५]

स पुण्यकर्मा भुवि पूजितो नृपैरसुक्षये शक्रसलोकतां व्रजेत् ।। सु.सं. १-४१ ।। सनातनम् ...

आचार्य सुश्रुत का समय

यद्यपि विश्वामित्र ऋषि वेद कालीन हैं, रामायण कालीन भी हैं, अनेक विश्वामित्र हैं तथापि पाणिनी[६] से पूर्वकालीन किसी विश्वामित्र के पुत्र आचार्य सुश्रुत थे, यह निर्विवाद प्रमाण-संगत समय सिद्ध होता है । पाणिनी को इतिहासकारों ने ईसा से ७०० वर्ष पहले का बताया है । अत एव "आचार्य सुश्रुत ईसा से ९०० वर्ष पहले हुए" यह उनके जीवन का तर्कसंगत समय है । "महेन्द्र-राम-कृष्णानां ब्राह्मणानां गवामपि" चि. ३०-२७ से ज्ञात होता है कि आचार्य सुश्रुत भगवान् कृष्ण के पश्चात् कालीन हुए । पूर्णिमा आदि तिथियाँ चि.२९-१३; सू.६ ऋतुचर्याध्याय से काल-ज्ञान विषयक बोध संवत्सर, उत्तर-दक्षिण अयन, माघादि १२ मास, शिशिरादि ६ ऋतु, अक्षिनिमेष-काष्ठा-कलादि समय, रात-दिन अहोरात्र, शुक्ल-कृष्ण पक्ष, अष्टमी (सू.२-९) का ज्ञान था परन्तु रवि-सोम-मंगल आदि वारों का कहीं उल्लेख नहीं होने से वार-गणना काल (वराह मिहिर, मृत्यु ६८७ ई.) से आचार्य सुश्रुत पूर्वकालीन थे, कहा जाता है ।

यहाँ विस्तार से यदि विचार किया जाय तो आयुर्वेदावतरण का इतिहास बतलाने के लिये अवतारों में धन्वन्तरि आदि, महर्षियों में भरद्वाज, आत्रेय, कश्यप आदि की संहिताओं के प्रमाण देने होंगे । ऋषियों में अग्निवेश, भेल, काश्यप आदि की संहिताओं के प्रमाण देने होंगे । पुराण में भरद्वाज से आयुर्वेदविद्या का लाभ; धन्वन्तरि, आत्रेय, पुनर्वसु, कश्यप, दिवोदास के ग्रहण करने का पाया जाना उनके समकालिक होना माना भी जाये तो कुमारशिरा भरद्वाज, कृष्ण भरद्वाज आदि कई भरद्वाज गोत्र वालों का समावेश हो जायेगा ''सौश्रुतपार्थिवाः'' पाणिनिसूत्र के आधार से सुश्रुत शब्द "क्त" प्रत्ययान्त है, न कि क्विब् प्रत्ययान्त सुश्रुत ।। पाणिनीय सूत्रपाठ, धातुपाठ गणपाठ[७] आदि के आधार पर चरक और सुश्रुत दोनों महर्षि पाणिनी के समय से पूर्वकालीन थे यह तो सिद्ध होता है ।

१: चरक संहिता[८] में गर्भाङ्गों की निवृत्ति विषयक प्रश्न पर "सर्वांगाभिनिर्वृत्तिर्युगपदिति धन्वन्तरिः," २: तत्र धान्वन्तरीयाणाम् अधिकारः । ३: ताः शल्यविद्भिः कुशलैश्चिकित्स्याः । ४: इदं तु शल्यहर्तृणां कर्म.. आदि से आत्रेय सम्प्रदाय और धन्वन्तरि सम्प्रदाय की स्वतन्त्र सत्ताओं का बोध होता है । परन्तु सुश्रुत संहिता में आत्रेय/चरक जैसे शब्दों का उल्लेख नहीं मिलता ।

आचार्य सुश्रुत काश्यप से भी पूर्वकालीन हैं । क्योंकि इनके आचार्य का नाम स्वाहाकार में प्रजापति, इन्द्र के बाद "धन्वन्तरये स्वाहा" काश्यप संहिता[९] में मिलता है । यद्यपि ये भगवान् राम और कृष्ण के समान एक अवतारी पुरुष ही थे । इससे धन्वन्तरि का देवों की गणना में भी समावेश हो जाता है। इसीलये मानना पडता है कि चरक और सुश्रुत के काल पर संक्षेप में कहा जाय तो चरक की अपेक्षा सुश्रुत पूर्वकालीन थे ।

वैदिक संस्कृति रक्षक आचार्य सुश्रुत

सुश्रुत संहिता में देव-देवियों के ३७ नाम-अग्नि, अम्बिका, अश्विनीद्वय, इन्द्र, ईशान,उमा, काल, कुमार, कृत्तिका, कृष्ण, गुहा, गंगा, चण्डी, चन्द्र, त्रिपुरारि, धन्वन्तरि (आदिदेव), धन्वन्तरि (दिवोदास), पर्जन्य, पार्वती, पितामह, प्रजापति, बृहस्पति, ब्रह्मा, महेन्द्र, राम, रुद्र, वरुण, वायु, विष्णु, वैश्वानर, शिव, शूली, शम्भु, स्कन्द, स्वयम्भु, सूर्य, सोम मिलते । परन्तु नदियो में भागीरथी, गंगा, जाह्नवी, शब्द नहीं मिलते । तथा

औपधेनव, औरभ्र, कृतवीर्य, पाराशर्य, पौष्कलावत, मार्कण्डेय, विदेहाधिप, शौनक, सुभूतिर्गोतम इन ९ ऋषियों के नाम आयुर्वेदीय अधिकारियों के रूप में मिलते हैं । सू. २-४ पर शिष्योपनयन के लिये दार्वी हौमिक विधि से ब्रह्म-यज्ञ के समय अग्नि, विप्र और भिषक् की पूजा का;चि. २७-१९ और उ. ६०-२८ पर क्रमशः बाल-ग्रह और उन्माद चिकित्सा के लिये ग्रहशान्ति होम चि. २८-१०, २८-२५ पर क्रमशः श्री-सूक्त-मन्त्र जप एवं त्रिपदा गायत्री मन्त्र जप का विधान रसायन चिकित्सार्थ बतलाया है । शस्त्र कर्म के बाद में सू.५-१७ से ३३ तक रक्षा-कर्म हेतु आदि, 'एतैर्वेदात्मकैर्मन्त्रैः कृत्याव्याधिविनाशनैः । मयैव कृतरक्षस्त्वं दीर्घमायुरवाप्नुहि" "स्थान स्थान पर रक्षा के लिये गर्भाधान से लेकर प्रसव, स्तन्यपान, कर्णवेध, नामकरण, औषध संग्रहण, भेषज निर्माण, तुवरकादि तैलपान, रोग-निवारण, विष निवारण तथा विविध शस्त्रकर्म के लिये बलि-मंगल-स्वस्त्ययन-पूजा-प्रार्थना-मन्त्रप्रयोग का विधान किया है । आयुर्वेद का प्रादुर्भाव, वेद कालीन शस्त्र-कर्म, ज्वर-राजयक्ष्मा, विष-लूता आदि की उत्पत्ति की कथायें भी लिखी हैं । इससे प्रमाणित होता है कि आचार्य सुश्रुत वैदिक संस्कृति के रक्षक थे ।

आचार्य सुश्रुत की यशोगाथा

आचार्य सुश्रुत उस जमाने में ३०० प्रकार के सर्जरी के विधानों के लिये १२० तरह के शस्त्र एवं यन्त्रों का आविष्कार कर के आज के युग में कहलाई जाने वाली प्लास्टिक सर्जरी के जन्मदाता भी सिद्ध हुए । सुश्रुत संहिता की मूल भाषा संस्कृत है, जिसे अमरवाणी कहा जाता है, देवभाषा है ।

हिन्दी भाषा में–

प्रो.अम्बिका दत्त जी शास्त्री ने सम्पूर्ण और बृहत् त्रयी के हिन्दी भाषा में अनुवादक आचार्य प्रवर अत्रिदेव विद्यालंकार जी का ई.सन् १९४९ में इसका हिन्दी भाषा में अनुवाद मुद्रित हुआ । इसके पञ्चम संस्करण (१९७५) के पश्चात् कई बार पुनर्मुद्रण भी हुए । इनसे पहले के भी अनेक अनुवादकों के प्रकाशन कुछ पूर्ण तथा कुछ अपूर्ण थे । १९९८ में प्रो. भास्कर गोविन्द, घाणेकर जी का शारीर स्थान पर अपना स्वतन्त्र विचार सामने आया । अनेक भारतीय भाषाओं में अनुवाद हुए ।

विदेशी भाषाओं में इसके अनुवाद यहाँ लिखे हैं–

विदेशी भाषाओं में सुश्रुत संहिता के अनुवाद– "Sushruta Samhita" was translated into Arabic as *Kitab-Shaw Shoon-a-Hindi* and *Kitab-i-Susrud*. The translation of "Sushruta Samhita" was ordered by the Caliph Mansur (A.D. 753-774). One of the most important documents in connection with ancient Indian medicine is the Bower Manuscript, a birch bark medical treatise discovered in Kuchar (in eastern Turkistan), dated around A.D. 450 and is housed in the Oxford University library. The first European translation of "Sushruta Samhita" was published by Hessler into Latin and by Muller into German in the early 19th century.

१. अरबी भाषा में ईसा की आठवीं शताब्दि में *"Kitab-Shaw Shoon-a-Hindi* and *Kitab-i-Susrud"* किताब शाँ शून ए हिन्दी और किताब इ सुस्रुद के नाम से इब्न आबिला सिबल के द्वारा सुश्रुत संहिता का अनुवाद होने से तत् कालीन विख्यात शल्यचिकित्सक Al-Rhazi हाजिस को इसका सन्दर्भ मिलने पर व्यापक प्रचार हुआ और ससम्मान

२. पर्शियन भाषा में अनुवादित हुआ ।

३. **इटालियन भाषा में पन्द्रहवीं सदी में सिचिली** (Sicily) **के ब्रान्चा** (Branca family) **परिवार ने इसके आधार पर शल्य चिकित्सा कर के खूब धन और कीर्ति प्राप्त की। और** Susruta (O Sushruta) fu un medico indiano che visse fra il II secolo a.C. ed il II secolo d.C., durante "l'era d'oro" della cultura induista nella regione di Pataliputra. Scrisse diverse opere di medicina e sosteneva l'opportunità della disinfezione delle ferite.

इसका लाभ उठा कर योरोप में पन्द्रहवीं शताब्दी के मध्य में गुलिलियो चेसारे आरांझिओ ने इसके आधार पर पढाना शुरू किया। (In the mid 1500s, Guilio Cesare Aranzio, a professor of surgery and anatomy at Bologna, held classes in rhinoplasty at University of Bologna).

४. **लेटिन भाषा में एफ. ह्यास्लेर** (F.HYASLER) The first European translation of "Sushruta Samhita" was published by Hessler in Latin in 1844 A.D.

५. **जर्मन भाषा में–** SUSHRUTA (auch Susruta;) oder einfach nur Der Chirurg genannt, war ein indischer Arzt.

६. **फ्रेंच भाषा में–** SUSHRUTA est un chirurgien de l'Inde ancienne, auteur du traité de chirurgie SUSHRUTA SAMHITA, texte fondateur de la médecine ayurvédique, dans lequel il classe la chirurgie humaine en 8 catégories et décrit plus de 300 procédures et 120 instruments chirurgicaux. On ne connaît pas avec certitude ses dates de naissance et de décès, mais on pense qu'il vécut probablement au.

७. **स्वेन्स्का (स्वीडिश) भाषा में–** SUSHRUTA var en indisk läkare på 400-talet, som gäller som största auktoritet inom ayurvedisk medicin.

८. अंग्रेजी भाषा में– ई.सन् १८८३ में यू.सी. दत्ता ने ई.स. १८९१ में ए.चट्टोपाध्याय ने और ई.सन्. १९०७ में सूत्र स्थान तथा १९११ में निदान, शारीर, चिकित्सा, कल्प और तीसरी बार में १९१६ में स्वयं ने प्रकाशित भी किया। कविराज कुञ्जीलाल भिषगरत्न के महत्त्वपूर्ण तुलनात्मक विवेचन, प्राक्कथन, टिप्पणी, शब्दावली,विषय सूची और चित्रों से प्रभावित होकर विदेशों में सुश्रुत का व्यापक प्रचार हुआ । प्रो.जी.डी.सिंघल का ई.सन् . १९८१–८४ में सम्पूर्ण डल्हणी टीका के साथ छपा । मेरे सहपाठी मित्र प्रो.के.आर.श्रीकण्ठमूर्ति का ई.सन्. २००० में पहला, २००१ में दूसरा, २००२ में तीसरा और चौथा खण्ड मुद्रित हुआ, जिसके १३ अनुलग्नकों में अति उत्तम सन्दर्भ प्रस्तुत हैं। प्रो. के.सी.चुनेकर जी के साथ प्रो. सी.एल.यादव जी का "मेडिसिनल प्लाण्ट्स ऑफ सुश्रुत" ई.सन्. २००५ में अंग्रेजी भाषा में मुद्रित हुआ ।

९. जापानी भाषा में– क्योतो युनिवर्सिटी के प्रो. ओजीहारा जोओगेन और चिबा मेडीकल स्कूल प्रो. डॉ.याएजी इतो के साथ डॉ.मासाओ सुजुकि द्वारा बीसवीं शताब्दि में इसके दो अनुवादों के प्रताप से आज जापान आयुर्वेद सोसाइटी चल रही है । ई.सन् १९७० से इस सोसाइटी का नाम डॉ. हिरोशी मारुयामा ने डॉ. बेन हताई, इनामुरा हिरोए आदि से सहयोग पाकर "रिसर्च सोसाइटी फॉर आयुर्वेद" रखा था । धीरे धीरे वार्षिक सम्मेलन शुरु हुए और इसके चौथे वार्षिक सम्मेलन १९८२ ई.में मेरा आवाहन किया गया । तत् पश्चात डॉ. के.एन.उडुप्पा, एस.एन.त्रिपाठी, दामोदर जोशी शास्त्री, मधु भाई कोठिया, रमेश हरवालकर, नामाधार शर्मा आदि को बुलाया गया ।

प्रथम जापानी महिला डॉ.इनामुरा हिरोए शर्मा ने सन् १९८२ में जामनगर से (सुवर्ण–पदक–प्राप्त) स्नातक होकर पञ्चकर्म में स्नातकोत्तर शिक्षा पाई और जापान में आयुर्वेद की सर्व–प्रथम शिक्षणान्वेषण संस्था को ओसाका में जन्म दिया । इसके प्रताप से जापान में क्षार–सूत्र चिकित्सा प्रचलित हुई । शिरोधारा आदि बहिःपरिमार्जन के अनेक चिकित्सक बन गये ।

आज पाँच जापानी लोग जामनगर से ग्रेजुएट होकर जापान में कार्यरत हैं । साथ साथ डॉ. बेन हताई ने डॉ. यू.के. कृष्णा को प्रश्रय देकर तोक्यो में दूसरी शिक्षण संस्था चालू की । इस संस्था का नाम बदला "जापान आयुर्वेद सोसाइटी" और प्रति वर्ष भारत तथा श्रीलंका से डॉ. उपाली पिलिपितिया आदि अनेक चिकित्सकों को बुलाया जा रहा है । यथाः उडुपी से डॉ. भट्ट आदि, जामनगर से डॉ. हाजमाडी आचार्य आदि, केरल से डॉ. के.यू.पिल्लै, डॉ.शशिकुमार निचियिल, डॉ.कृष्णप्रभा शशिकुमार एवं जामनगर से वाइस चाँसलर प्रोफेसर मेधावीलाल शर्माजी का आवाहन हुआ है ।

इतना ही नही अपितु जयवर्मा के शिलालेख में तथा काम्बोडिया में नरपति यशोवर्मा के शिलालेख में भी आचार्य सुश्रुत का नाम है ।

यहाँ के ख्मेर आर्ट्स के शिलालेख को हम दोनो ने काम्बोडिया की राजधानी फ्नोम पेन्ह PHNOM PENH के नेशनल म्यूजियम में देखा है । इस प्रदर्शनागार में प्रवेश के लिये धोत्ती पहने हुए मुझे घुसने नही दिया जाने पर वापस होटल जा कर पेण्ट पहन कर लौटना पडा था । काम्बोडिया के ख्मेर काल और अंग्कोर काल के आर्कियोलोजिकल एवं एथ्नोग्राफिक संग्रह सुप्रसिद्ध हैं । इसमें भगवान् विष्णु की विशाल प्रतिमा एवं श्रीगणेशजी आदि की मूर्तियाँ भी हैं । सिआम रीप SIAM REAP नगर में भारतीय संस्कृति के साक्षात् दर्शन हुए जो १५ वीं सदी के अवशेष "अंकोल वट" के नाम से विश्व विदित है ।

Dr. Oakley Sm688 Coxwell Avenueith Rhinoplasty, Toronto, ON M4C 3B7 **लिखते हैं**:-

"Sushruta's system, which involved using a flap of skin from the forehead to rebuild the nose, is still the basis for many of

today's procedures and is still called the Indian forehead flap rhinoplasty. P: 416.465.5795 F: 416.465.5701" The history of rhinoplasty is fascinating. It originated in India thousands of years ago. Around 500 BC, Sushruta, one of the most noted physicians of ancient India and who is today often described as the 'Father of Surgery,' wrote a treatise on rhinoplasty.

Sanskrita medical text called *Sushruta Samhita* is found in one of the four *vedas:* The *rigveda*, the *samaveda*, the *yajurveda*, and the *atharvaveda*. All the four *vedas* are in the form of *shlokas* (hymns), verses, incantations, and rites in *sanskrita* language. "*Sushruta Samhita*" is believed to be a part of *atharvaveda*. Sushruta's system: In ancient India, nose amputation was commonly used as punishment. Sushruta and his followers reconstructed the noses of those so mutilated. Sushruta, who resided in Benaras, India, developed many techniques and implements for surgery. The Sushruta Samhita text not only detailed medical procedures, but also identified and gave the treatment for several diseases. Sushruta described heart pain, hypertension, and leprosy. The works of Sushruta and Caraka, another famous Indian physician, were translated into Arabic during the 8th century as knowledge moved westward along the silk/spice route.

Then the texts made their way to Italy in the 15th century where the Branca family of Sicily became famous and wealthy by practicing reconstructive surgery of facial mutilations including rhinoplasty. In the mid 1500s, Guilio Cesare Aranzio, a professor of surgery and anatomy at Bologna, held classes in rhinoplasty and probably was an influence on Gaspare Tagliacozzi. Tagliacozzi was a professor of surgery and anatomy.

The University of Bologna published De curtorum chirurgia to instruct surgeons on reconstructing noses and ears. It is the first published work on plastic surgery. The work's 22 plates depict every step of the process of rhinoplasty and are among the best-known illustrations in the history of all medicine. Shown here is the patient immobilized in a vest of Tagliacozzi's devising, waiting for the skin flap from the arm to adhere to the nose. The process was supposed to take 2–3 weeks. The method has largely been superseded by nasal skin flaps located closer to the nose nowadays. Tagliacozzi was considered by some to be the "Father of Plastic Surgery."

Kansupada KB, Sassani JW. Source: Pennsylvannia State Medical Center, Hershey, USA.

नासा–सन्धान–विधि पर वैद्य सुमेश आयुर्वेद ने एक सुन्दर विडिओ प्रकाशित किया है । इसे अपने अपने कम्प्यूटर में देखा जा सकता है । वैद्य सुमेश आयुर्वेदः–

Ayurvedic Panchakarma Technician (M.O.H and D.H.A.) Dubai at City Point International Specialists Medical Centre, studied at University of Kerala, lives in Dubai, United Arab Emirates, and is married to Arya Sumesh from Thiruvananthapuram (Trivandrum), India.

नासा–सन्धान –विधि

विश्लेषितायास्त्वथ नासिकाया वक्ष्यामि सन्धानविधिं यथावत् । नासा–प्रमाणं पृथिवीरुहाणां पत्रं गृहीत्वा त्ववलम्बि तस्य ।।४६।। तेन प्रमाणेन हि गण्डपार्श्वाद् उत्कृत्य बद्धं त्वथ नासिकाग्रम् । विलिख्य चाशु प्रतिसंदधीत तत् साधुबद्धैर् भिषगप्रमत्तः ।।४७।। सुसंहितं सम्यगतो यथावन् नाडीद्वयेनाभिसमीक्ष्य बद्ध्वा । प्रोन्नम्य चैनाम् अवचूर्णयेत्तु पतंग–यष्टी–मधुकाञ्जनैश्च ।।४८।। संछाद्य सम्यक् पिचुना सितेन तैलेन सिञ्चेद् असकृत् तिलानाम् । घृतं च पाय्यः स नरः सुजीर्णे स्निग्धो विरेच्यः स यथोपदेशम् ।।४९।। रूढं च सन्धानमुपागतं स्यात् तदर्धशेषं तु पुनर्निकृन्तेत् । हीनां पुनर्वर्धयितु यतेत समां च कुर्याद् अतिवृद्धमांसम् ।। ६०।। सु.सू. १६–४६।।

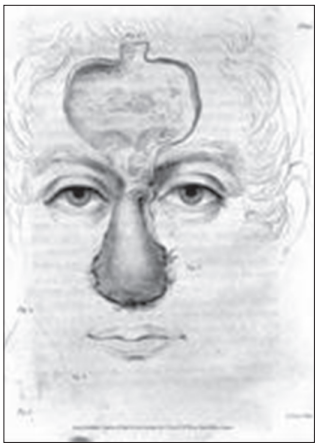

विशेषः निर्णय सागर प्रकाशन के तीसरे संस्करण में–

(अ) कहीं कहीं पर गणना में/श्लोकार्ध को भी अग्रिम संख्या दे दी गई है यथा––क.३–४४

(आ) कहीं कहीं पर गणना में/श्लोकार्ध को भी पूर्ण श्लोक संख्या में समाहित कर दिया गया है यथा – ८–१४३

(इ) कहीं कहीं पर श्लोकार्ध लिखा है परन्तु हस्तलिखित पुस्तकों में उसका लेख नहीं होने से गणना में नहीं लिया गया है यथा–उ०११ का अन्तिम श्लोक ।। अत एव श्लोक गणना में इयत्ता नहीं रहती है । फिर भी गणितपूर्वक ८३०१ गद्य + पद्य = संख्या मिलती है ।।

स्थानाध्यायानुसार गद्यपद्यगणना

क्रमांक	स्थाना	अध्याय संख्या	गद्य+पद्य=संख्या
१	सूत्र स्थान	४६	२०९६
२	निदान स्थान	१६	५२८
३	शारीर स्थान	१०	४४२
४	चि कित्सा स्थान	४०	२०३१
५	कल्प स्थान	०८	५५४
६	उत्तर तन्त्र	६६	५५४
५	स्थान+१ तन्त्र=६ योग	१८६	८३०१

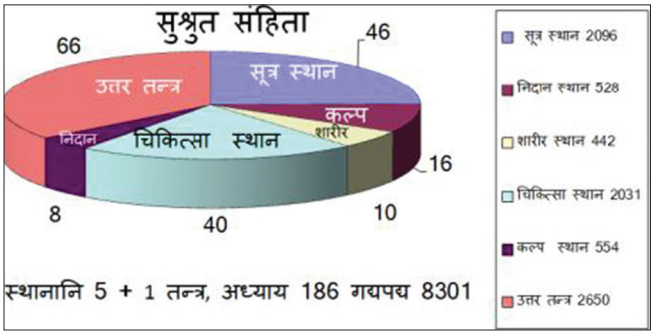

Continued in Part 2.....

संदर्भ

१. Vaidya CV. History of Sanskrita Literature Vedic Period. Poona: Arya – Bhushan Press, 1930; p. 129.

२. श्रीमान महाभारतम्, हरिवंशपुराण, पंडित रामचंद्रशास्त्री किंजवडेकर द्वारा संपादित, काश्यपवर्णनम् अध्याय – २९, प्रथम संस्करण, चित्रशाला प्रेस, पुणे, १९३६; ७४–७८.

३. श्रीमद्भागवत, श्रीशांतिशंकर वेणीशंकर मेहता द्वारा अनुवादित तथा प्रकाशित, द्वितीय खण्ड, नवम् स्कन्ध, अध्याय –१७, प्रथम आवृत्ति, श्रीशांति प्रार्थना मंदिर, भावनगर, १९६२; १६०–१६१.

४. सुश्रुताचार्य, सुश्रुत संहिता, चिकित्सा स्थान, २/३; उत्तरतंत्र, ६६/४, आचार्योपाह्वेन त्रिविक्रमात्मजेन यादवशर्मणा संशोधित, प्रथम संस्करण, चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी, २००८.

५. अग्निवेश, चरक, दृढबल, चरक संहिता,सूत्रस्थान,२६/३,३०, आचार्योपाह्वेन त्रिविक्रमात्मजेन यादवशर्मणा संशोधित, द्वितीय आवृत्ति, चौखम्भा संस्कृ त संस्थान, वाराणसी,१९९०.

६. श्रीपाणिनिमुनि, अष्टाध्यायी सूत्रपाठ, ''नद्यादिभ्यो ढक्'' ४–२/९७, ''काश्यादिभ्यष्ठञ्ञिठौ'' ४–२/११६, ''कार्तकौजपादयश्च''६–२/३७, आदि. षष्ठ संस्करण, चौखम्भा संस्कृ त सीरीज ऑफिस, वाराणसी,१९६५.

७. श्रीपाणिनिमुनि, अष्टाध्यायी सूत्रपाठ, ''कार्तकौजपादयश्च'' ६–२/३७, ''सौश्रुतपार्थिवाः'', ''कठचरकाल्लुक्''४–३/१०९, ''माणवकचरकाभ्यां खञ्''५–१/१४. षष्ठ संस्करण, चौखम्भा संस्कृ त सीरीज ऑफिस, वाराणसी,१९६५.

८. अग्निवेश, चरक, दृढबल, चरक संहिता,शारीर स्थान,६/२१, चिकित्सा स्थान, ५/५८, १३/१८४. आचार्योपाह्वेन त्रिविक्रमात्म जेन यादवशर्मणा संशोधित, द्वितीय आवृत्ति, चौखम्भा संस्कृ त संस्थान, वाराणसी,१९९०.

९. वृद्ध जीवक , वत्स्य, काश्यप संहिता, विमान स्थान अध्याय –३ शिष्योपक्रमणीयाध्याय, पंडित हेमराज शर्मा लिखित, श्रीसत्यपाल भिषगाचार्य अनुवादित, पुनर्मुद्रित. चौखम्भा संस्कृत संस्थान, वाराणसी,२००८;५७.

Author Help: Online submission of the manuscripts

Articles can be submitted online from http://www.journalonweb.com. For online submission, the articles should be prepared in two files (first page file and article file). Images should be submitted separately.

1) **First Page File:**
Prepare the title page, covering letter, acknowledgement etc. using a word processor program. All information related to your identity should be included here. Use text/rtf/doc/pdf files. Do not zip the files.

2) **Article File:**
The main text of the article, beginning with the Abstract to References (including tables) should be in this file. Do not include any information (such as acknowledgement, your names in page headers etc.) in this file. Use text/rtf/doc/pdf files. Do not zip the files. Limit the file size to 1 MB. Do not incorporate images in the file. If file size is large, graphs can be submitted separately as images, without their being incorporated in the article file. This will reduce the size of the file.

3) **Images:**
Submit good quality color images. Each image should be less than **4 MB** in size. The size of the image can be reduced by decreasing the actual height and width of the images (keep up to about 6 inches and up to about 1800 x 1200 pixels). JPEG is the most suitable file format. The image quality should be good enough to judge the scientific value of the image. For the purpose of printing, always retain a good quality, high resolution image. This high resolution image should be sent to the editorial office at the time of sending a revised article.

4) **Legends:**
Legends for the figures/images should be included at the end of the article file.